ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 264-266
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'खिलेगा तो देखेंगे' का औपन्यासिक शिल्पः एक विवेचन

1. डॉ0 राजनारायण शुक्ल 2. वीणा शुक्ला

1. अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शम्भुदयाल कालेज, गाजियाबाद 2. पी0जी0टी0– हिन्दी विभाग, के0ए0एस0एच0 5 कविनगर,गाजियाबाद (उ0प्र0)

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -beenashukla1@gmail.com

सारांश : *उपन्यास –कथा का मुख्य केंद्र गुरु जी और उनका परिवार है। गुरु जी अपनी पत्नी दो बच्चे एक लड़की और एक लड़का के साथ बड़गांव के एक माध्यमिक पाठशाला में सपरिवार रहते हैं और वहां पढ़ाते हैं। एक दिन जोर की आंधी के कारण पाठशाला का बचा हुआ छप्पर उलट जाता है। वे गांव के पीपल के वृक्ष के नीचे ही सपरिवार रहने की सोचते हैं पर मुन्नी बेटी के कारण अपना विचार बदल लेते हैं और गांव के खाली पड़े थाने में कुछ दिन के लिए रहने लगते हैं । थाने में रहकर गुरुजी, लोगों के मन में उनके प्रति क्या– क्या विचार होंगे यह सोचते रहते हैं । बाद में वे रेलगाड़ी की एक झोपड़ी नुमा डब्बे को घर बनाकर रहने लगते हैं।*

कुंजीभूत शब्द– माध्यमिक पाठशाला, सपरिवार, मेहती महत्वाकांक्षाओ, प्राप्ति–प्रतीक्षा, प्रचेष्टाओ ।

इस उपन्यास का शीर्षक 'खिलेगा तो देखेंगे' वस्तुतः मानव की मेहती महत्वाकांक्षाओ की प्राप्ति –प्रतीक्षा है जो अपनी पुष्ट प्रचेष्टाओ द्वारा संघर्षशील रहते हुए सुंदरता भविष्य के प्रति आस्थावान है। कलियां खिलकर फूल का रूप धारण करती हैं, विकासशील गतिशील जीवन भी कलियों के समान उद्धवमुखी बन भविष्य की संकल्पनाओं को सहेजे आशा –ज्योति को दीप्तिमान किए रहता है।

इस उपन्यास की रोचकता और आकर्षण मुख्यतः इसकी कौतुकपूर्ण भाषा शैली और संवाद योजना है, कथानक गौण है । कुछ नई दार्शनिक उक्तियों का समावेश सहज, शील भाषा के साथ गंभीर चिंतन को प्रेरित करता है ।

उपन्यास–कथा का मुख्य केंद्र गुरु जी और उनका परिवार है। गुरु जी अपनी पत्नी दो बच्चे एक लड़की और एक लड़का के साथ बड़गांव के एक माध्यमिक पाठशाला में सपरिवार रहते हैं और वहां पढ़ाते हैं। एक दिन जोर की आंधी के कारण पाठशाला का बचा हुआ छप्पर उलट जाता है। वे गांव के पीपल के वृक्ष के नीचे ही सपरिवार रहने की सोचते हैं पर मुन्नी बेटी के कारण अपना विचार बदल लेते हैं और गांव के खाली पड़े थाने में कुछ दिन के लिए रहने लगते हैं। थाने में रहकर गुरुजी, लोगों के मन में उनके प्रति क्या– क्या विचार होंगे यह सोचते रहते हैं । बाद में वे रेलगाड़ी की एक झोपड़ी नुमा डब्बे को घर बनाकर रहने लगते हैं।

थाने में रहने का विचार उनके मन में कई शंकाएं उत्पन्न करता है:–

" यह भले आदमी की जगह नहीं है ।" गुरुजी बोले

" जगह की क्या खराबी है।" कोटवार बोला

"डर तो नहीं लगता गुरुजी?" बहुत अपनेपन से जिवराखन बोला।

" मैंने कोई चोरी नहीं की है।" कोई डाका नहीं डाला है।" गुरु जी ने कहा।

" आप रहने लगे तो जगह अच्छी हो गई। बुरा आदमी जहां रहेगा , वह जगह खराब हो जाएगी।" जिवराखन बोला।

देशीए रंगत में रंगी ग्रामीण– जनजीवन को अभिव्यक्त करते इस उपन्यास में कई किरदार हैं जो उपन्यास के कथा के फलक का विस्तार करते हैं और ससंदर्भित पृष्ठभूमि पर अपनी विशिष्ट कथा निर्मिती भी ।

गुरुजी के अतिरिक्त उपन्यास के अन्य पात्र हैं –गुरु जी की पत्नी , मुन्ना, गुरु जी का बेटा, मुन्नी, गुरु जी की बेटी, कोटवार, जिनराखन, घासीराम, थानेदार, ग्रामसेवक, शाला निरीक्षक, दीना दर्जी जिवराखन , डेरहिन,मनहर ढुकालू, फलेसर दाई, पुसऊ,भघेला, मुन्नी के साथ का युवक, चार बूढ़े आदि।

गुरु जी के कथा संसार के साथ उनके भाव– लोक कथाएं भी समानांतर चलती हैं जो उनके परिवार के इर्द–गिर्द की हैं । मुख्य कथा बड़ी नहीं है और उसके साथ अनेक प्रसंग और संवाद हैं, भाषाई करिश्मा हैं और उसके साथ हैं दार्शनिक सांकेतिक बातें जो स्वयं महत्वपूर्ण बन कथानक को गौण रूप देती हैं । यह उपन्यास तेईस उपशीर्षकों में विभाजित है । ये उपशीर्षक उपन्यास कथा के अंश हैं और गुढ़ार्थक हैं । इनकी शैली पद्यात्मक लयात्मकता युक्त है । कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं:–

"थाना बरगद इतना बड़ा था
कि जमीन के अंदर उसकी
जड़ों को फैलाव दूर–दूर और
थाने के कारण गुप्त लगता था।"

उपर्युक्त उपशीर्षक में मानव निर्मित थाने की भयावहता पर बल दिया गया है जो प्र.ति के विस्तार पर प्रभावी है । विशाल वटवृक्ष की जड़ें जमीन के अंदर दूर–दूर तक फैली

हैं पर थाने की वस्तुगत स्थिति क्षेत्र विशेष तक सीमित रहते भी दूर–दूर तक मानस संवेदना को स्पर्श करती है ।

"यह स्वतंत्र होने का प्रदर्शन है
चिड़िया जितनी स्वतंत्र होती
बिल्ली भी उतनी स्वतंत्र और
उन्मुख होती बिल्ली हमेशा
दबोचने वाली ताकत होती।"

उद्धत अंश में स्वतंत्रता का अर्थ और महत्व दो भिन्न प्रवृत्ति और चरित्र वाले प्राणियों के लिए भिन्न– भिन्न हो सकता है यह भी अभिव्यंजित किया गया है। चिड़िया के लिए स्वतंत्रता जिस रूप में है बिल्ली के लिए उसी रूप में नहीं। जिसके पास ताकत है वह अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग भी करता है किसी की स्वतंत्रता छिनने के रूप में , उस पर हावी होने के रूप में या अन्य तरह से ।

कथानक का काल – प्रवाह एक – सा नहीं है। गुरुजी उनकी धर्मपत्नी और उसके पुत्र मुन्ना, पुत्री मुन्नी कभी अतीतकालीन कथा के अंश हो जाते हैं कभी भविष्यकालीन। उदाहरण दृष्टव्य है :–

"दूर आगे सुबह–सुबह एक .श्य में फुलेसर दाई जमीन ढूंढते हुए जा रही थी ।पीछे मुन्ना को गोद में लिए मुन्ना की मां थी। मुन्ना एक पुराने कपड़े की चिंदी की लंगोट पहने था और उधारा था।

निम्नलिखित उदाहरण अधेड़ मुन्नी को प्रसंग से संबंधित हैं ".श्य में कई रात कई दिन से निकलकर एक सुंदर लड़की अधेड़ औरत होकर गांव पहुंचती है। गांव ढूंढते–ढूंढते वह दो शाश्वत अलग–अलग पहाड़ी की ओर जाती है यह सुहाना .श्य जैसा होगा। अधेड़ औरत रात– दिन से परे, रात दिन से बिल्कुल अलग ही हो ।वह केवल अपने गांव में होती है। पहाड़ी की ओर का .श्य हमेशा सुहावना होता है ।रात –दिन के अलावा सुहावना समय होता है । अधेड़ औरत को मुन्ना दिखाई देगा । मुन्ना अंधेडे मुन्ना होगा । वह भूख की नींद में सो रहा होगा।"

विनोद कुमार शुक्ल ने जीवन और परिस्थितियों की विकटता से दुखी लोगों के व्यवहारिक जीवन की नाटकीयता और यथार्थता का उल्लेख मार्मिक ढंग से किया है:– गांव के लोगों में सामान्य बातचीत में मीठा व्यंग और नाटकीयता होती है। दुख की उपेक्षा की फीकी हंसी देते। हंसी इतनी फीकी होती कि उसके बाद रोना आता। अधिकतर रोने में हंसी थी। कभी–कभी सचमुच रो देते। पचास पैसे की जलेबी की मिठास कई दिनों तक रहती। कभी–कभी पांच 6 महीने तक रहती।"

गरीबों की संपत्ति गरीबी ही है जो स्वयं में कई समस्याओं और दुखों का पुजं है। उपन्यासकार की संवेदना गरीबी पर मर्मस्पर्शी व्यंग करती है:– " अगर गरीबी थी तो क्या इसके बाद कुछ ना खोने का सुख था। गरीब आदमी क्या खोएगा। अगर वे झुककर जोहार करते थे तो यह कारण नहीं था कि उनकी जेब में पैसे नहीं थे जो झुकने से गिर जाते। जिसकी जेब कट जाती थी वह खोटा नहीं था । लूट जाता था लोगों को लूटने का पता नहीं चलता।"

दांपत्य प्रेम किसी भी परिवार की आधारशिला है। उपन्यासकार ने अभावों, दुखों से जूझते लोगों के बीच इस स्त्रोत को सूखने नहीं दिया है और अपने ढंग से खोज निकाला है–

"पति पत्नी के लिए प्रेम के अवसर घर में बहुत थे। प्रेम के अवसर गृहस्थी की तरह थे। इन्हें ढूंढने की जरूरत नहीं होती कि अवसर नहीं मिल रहा है और ढूंढते हुए घर से बहुत दूर निकल गए। प्रेम का अवसर कहीं दिखा यह पूछने की जरूरत नहीं होती। क्या नदी से पूछें कि तुम्हारे किनारे प्रेम का अवसर है। तालाब, जंगल, पेड़ से पूछे प्रेम के का अवसर दोनों के साथ रहता।

बल्कि आगे पीछे घूमता रहता। कभी अवसरों की भीड़ लग जाती कि कई रंगों की तितलियां आस–पास मंडरा रही हैं। जिधर जाते तितलियां उड़ते उड़ते वही पहुंच जाती। चौकी में पहुंच जाती, परछी में पहुंच जाती, पेड़ के पास पहुंच जाती। नदी के किनारे पहुंच जाती। कई बार एक छोटी जगह पर पीले रंग की छोटी–छोटी अनेक तितलियां बैठी रहती।

पति पत्नी के परस्पर क्रीडाओ संवादों का उपन्यासकार ने भावात्मक शैली में व्यक्त किया है–
" जहां जाना पीठ मे लादे मुझको ले जाना। मैं तुम्हारे बिन अपंग हूं। जाओगे तो मुझे लादना होगा। मैं प्रार्थना करूंगी कि मेरा भार तुम्हें याद न रहे और तुम्हें मेरी याद हमेशा रहे।"
उपन्यास की कथा अत्यंत विकसित ग्रामीण परिवेश की है । इसका आरंभ ही निम्नलिखित वाक्य से होता है :–
"गांव में केवल दो पक्के मकान थे एक ग्राम सेवक का क्वार्टर और दूसरा पुलिस थाना । झोपड़ियों की तुलना में दोनों भव्य लगते।
उपरोक्त उपरोक्त पंक्तियों से गांव की अवस्था,उसके पिछड़ेपन का अंदाजा लगाया जा सकता है ।

गांव के लोग गरीबों से जीवन यापन करते हैं। वहां प्राथमिक पाठशाला है पर वह भी पक्का नहीं । गुरुजी के पढ़ाते समय वहां बकरिया आ जाया करती हैं। सरकारी नौकरी करने के बावजूद गुरुजी के पास रहने की समुचित व्यवस्था नहीं है। गांव में बिजली नहीं पहुंची है। वहां के लोगों में शिक्षा का अभाव है और वह अंधविश्वासों में जीते हैं। घासीराम के बच्चे का नाक से खून बहने पर उसे गोबर

सुघाया जाता है–

'' बच्चे को लेकर कोटद्वार थाने से निकला। अहाते के बाहर कुछ सुखा– सा गोबर पड़ा था। गोबर उठाकर उसने बच्चे की नाक में सुघं ाया। खून धीरे–धीरे गिर रहा था पर बंद नहीं हो रहा था । गोबर फेक कर वह तेजी से घर की तरफ बढ़ा। घर पहुंचने से पहले ही उसका बच्चा मर गया।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी :साहित्य में उपयोगिता का प्रश्न, वीणाः श्री मध्य भारतीय हिंदी साहित्य समिति, इंदौर की मासिक मुख्य पत्रिका, 192 7, वर्ष 75, अंक 2, माघ 2058, फरवरी 2002
2. आर.के. जैन उपन्यास सिद्धांत और संरचना,1972, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पृ०– 11
3. विनोद कुमार शुक्ल, नौकर की कमीज, 1994 , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृ०–144
4. वही, पृ०–251–252
5. वही, पृ०–7
6. वही, पृ०–9
7. वही, पृ०–229
8. विनोद कुमार शुक्ल, नौकर की कमीज , 1994 , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली , पृ०–126–127
9. वही, पृ०–219
10. वही, पृ०–238
11. वही, पृ०–238
12. वही, पृ०–222
13. वही, पृ०–118
14. वही, पृ०–139
15. वही, पृ०–220
16. वही, पृ०–227
17. वही, पृ०–214
18. परमानंद श्रीवास्तव, उपन्यास का पुनर्जन्म, 1955, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,पृ० 182
19. विनोद कुमार शुक्ल, ''खिलेगा तो देखेंगे'', आधार प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996 पृ०–27
20. वही, पृ०–9
21. वही, पृ०–30
22. वही, पृ०–153
23. वही, पृ०–104
24. वही, पृ०–138
25. वही, पृ०–168
26. वही, पृ०–158
27. विनोद कुमार शुक्ल, ''खिलेगा तो देखेंगे'', आधार प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996 पृ०–114
28. वही, पृ०–9
29. वही, पृ०–12

*****